**भारत सरकार**

**पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय**

**राज्य सभा**

**अतारांकित प्रश्न संख्या 17**

**24.11.2014 को उत्तर दिए जाने के लिए**

**पेयजल की गुणवत्ता**

**17- Jh fr#ph f'kok%**

D;k is;ty vkSj LoPNrk ea=h ;g crkus dh d`ik djsaxs fd%

¼d½ D;k ;g lp gS fd xzkeh.k {ks=ksa esa yksxksa ds fy, is;ty dh xq.koÙkk dk vuqoh{k.k djus ds fy, dsoy 10 fefy;u lsok dsUnz gSa(

¼[k½ D;k ljdkj dks bl ckr dh tkudkjh gS fd ;wfulsQ dk v/;;u ;g [kqyklk djrk gS fd vi;kZIr tykiwfrZ vkSj lkQ&lQkbZ esa deh 45 izfr'kr Hkkjrh; cPpksa ds vYi fodkl vkSj izR;sd o"kZ ikap o"kZ ls de vk;q ds 6,00,000 cPpksa ds ejus ds izeq[k dkj.k gSa(

¼x½ D;k ljdkj fdlh de ykxr okyh izkS|ksfxdh ds fodkl gsrq lgk;rk iznku dj jgh gS ftldk mi;ksx Hkkjr dh xzkeh.k turk O;kid Lrj ij is; ty dh xq.koÙkk Lo;a tkapus ds fy, dj ldrh gS( vkSj

¼?k½ ;fn gka] rks rRlacaèh C;kSjk D;k gS vkSj ;fn ugha] rks blds D;k dkj.k gSa\

**उत्तर**

**पेयजल और स्‍वच्‍छता मंत्री**

**(श्री बीरेन्द्र सिंह)**

(क) जैसा कि विज्ञान तथा पर्यावरण केन्द्र द्वारा प्रकाशित ‘डाउन टू अर्थ’ पत्रिका में प्रकाशित हुआ है एक अनुसंधान समूह ने पेयजल की गुणवत्ता को मापने के लिए क्राउडसोर्सिंग तकनीक की शुरूआत की है। उनका दावा है कि यह तकनीक भारत जैसे देश के लिए वरदान साबित होगी जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए पेयजल की गुणवत्ता की जांच केवल 10 मिलियन सेवा बिंदुओं द्वारा की जाती है। तथापि, मंत्रालय की ऑनलाइन समेकित प्रबंधन सूचना प्रणाली पर राज्यों द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक जलापूर्ति स्कीम के स्रोतों की कुल संख्या 6.62 मिलियन है तथा सार्वजनिक निकासी बिंदुओं की कुल संख्या 1.519 मिलियन है जबकि विभिन्न स्तरों (राज्य/जिला/उप-प्रभागीय/ ब्लॉक) पर स्थापित प्रयोगशालाओं में 30.9 लाख पेयजल के नमूनों की जांच की गई है।

(ख) सरकार को विदित है कि यूनीसेफ ने अपनी रिपोर्ट “भारत में जलः स्थिति तथा संभावनाएं” में यह उल्लेख किया है कि 45 प्रतिशत भारतीय बच्चों के विकास में आई कमी तथा प्रति वर्ष 5 वर्ष से कम आयु के 6,00,000 बच्चों की मौत का प्रमुख कारण अपर्याप्त जलापूर्ति तथा खराब स्वच्छता है।

(ग) तथा (घ): केन्द्र प्रायोजित राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम (एनआरडीडब्ल्यूपी) के अंतर्गत राज्य को आबंटित निधियों की 3 प्रतिशत राशि का उपयोग जल गुणवत्ता की मॉनीटरिंग तथा निगरानी की गतिविधियों के लिए किया जा सकता है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ सभी ग्राम पंचायतों के लिए कम लागत वाली सरलता से उपयोग हेतु क्षेत्र जांच किटें/ रसायनिक रिफिल तथा जैविक वायल/स्ट्रिप शामिल हैं और 5 स्थानीय लोगों को पेयजल की गुणवत्ता की स्वतः जांच के लिए प्रशिक्षित किया जाना है। इस कार्यक्रम की शुरूआत वर्ष 2005-06 में हुई थी तथा मंत्रालय की ऑनलाइन समेकित सूचना प्रबंधन प्रणाली पर राज्यों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, अब तक (18/11/2014) ग्राम पंचायतों में 23.37 लाख स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को इन सरल क्षेत्र जांच किटों के उपयोग पर प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इस कार्यक्रम के आरंभ से लेकर दिनांक 18/11/2014 तक, 4.21 लाख रसायनिक जांच किटों तथा 11.38 करोड़ जैविक वायलों को खरीदा जा चुका है तथा राज्य सरकारों द्वारा इसकी सूचना दी जा चुकी है। राज्यों ने यह भी सूचना दी है कि उपर्युक्त अवधि के दौरान 36.37 लाख ग्रामीण पेयजल के स्रोतों की जांच की जा चुकी है।

\*\*\*\*\*\*